आरती श्री विराट भगवानजी की

हरिजू आरती भव्य बनी ।
रचना अति विचित्र रचि राखी, परति न गिरा गनी ।
कच्छप अध आसन अनूप अति, डांड़ी सहस फनी ।
महि सराव, सप्त सागर घृत, बाती सैल घनी ।
रबि-ससि-ज्योति जगत परिपूरन, हरति तिमिर रजनी ।
उड़त फूल उडुगन नभ अन्तर, अंजन घटा घनी ।
नारदादि सनकादि प्रजापति सुर-नर-असुर-अनी ।
काल-कर्म-गुन-ओर अंत नहिं, प्रभु-इच्छा रजनी ।
यह प्रताप दीपक सुनिरंतर लोक सकल भजनी ।
सूरदास सब प्रकट ध्यान में अति विचित्र सजनी ।

विवरण

हरिजू भगवान की आरती बड़े ही सुन्दर ढंग से बनी हुई है । इस आरती की सजावट इतने अद्भुत ढंग से है जिसकी हम अपनी वाणी से वर्णन नहीं कर सकते ।

सूर्य एवं चन्द्रमा की ज्योति सम्पूर्ण संसार के अन्धकार को हटाकर प्रकाश फैलाने वाली है, आकाश में रंग बिरंगे फूल उड़ रहे हैं, एवं विराट भगवान की आँखें काली घटा के समान घनी एवं काली है, नारद एवं सभी देवता आदि यहाँ तक कि असुर भी इनकी शरण में आते हैं ।

समय, कार्य एवं गुण का कोई अंत नहीं है, सब प्रभु की इच्छा के अनुसार ही होता है । विराट भगवान के इस प्रकाशमय प्रताप को यह सारा जग हमेशा भजता रहता है, सूरदास के ध्यान में ये विराट भगवान प्रगट होकर बड़े ही विचित्र लग रहें हैं ।